भाषाविज्ञान

डॉ. जयकुमार जलज

ISBN : 978-93-80943-91-6

© लेखक

प्रकाशक
आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान
डी-48, गली नं. 3, दयालपुर,
करावलनगर रोड, दिल्ली-110094
प्रथम संस्करण
2018
अक्षर संयोजक
प्रिंस कम्प्यूटर्स
दिल्ली
मुद्रक
बी. के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

मूल्य : 750.00 रुपये

अनुक्रम

प्राक्कथन vii

अध्याय एक : भाषाविज्ञान 17

भाषाविज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ- वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक। इनका स्वरूप और परिभाषा। इनकी परस्पर निर्भरता। भाषा का बाह्य और आन्तरिक पुनर्निर्माण।

अध्याय दो : भाषा : उत्पत्ति का प्रश्न 33

दैवी उत्पत्ति, निर्णय सिद्धान्त, ध्वनि अनुकरण सिद्धान्त, विस्मय बोधक सिद्धान्त, धातु सिद्धान्त, यो-हे-हो सिद्धान्त, इंगित सिद्धान्त, टा-टा सिद्धान्त, संगीत सिद्धान्त, सम्पर्क सिद्धान्त, मनुष्य के स्वरयंत्र की श्रेष्ठता का सिद्धान्त। भाषा उत्पत्ति का प्रश्न : भाषाविज्ञानेतर समस्या।

अध्याय तीन : भाषा गठन 52

उच्चारण अवयव, ध्वनि, भाषा ध्वनि, ध्वनि श्रवण, ध्वनि वर्गीकरण के आधार। ध्वनि/स्वन, संध्वनि/संस्वन, ध्वनिग्राम/स्वनग्राम, मुख्य ध्वनिग्राम/मुख्य स्वनग्राम, संयुक्त और गौण ध्वनिग्राम/स्वनग्राम, बलाघात, सुरघात, रूप और रूपग्राम, वाक्य, अर्थ।

अध्याय चार : भाषा का परिवर्तन/विकास 87

भाषा के परिवर्तन अर्थात् भाषा के विकास की अनिवार्यता, परिवर्तन के विभिन्न घटक।

अध्याय पाँच : ध्वनि 103

परिवर्तन के आन्तरिक कारण, बाह्य कारण, ध्वनि परिवर्तन के विविध आयाम, अपिनिहिति, पुरोहिति, अपश्रुति, ध्वनि नियम, ग्रिम नियम, ग्रैसमैन नियम, वर्नर नियम, तालव्य नियम।

अध्याय छह : मानस्वर 141

डैनियल जोन्स का चतुर्भुज : कुछ नई रेखाएँ।

अध्याय सात : रूप 145

रूपरचना, अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व का संयोग, लिंग, वचन, कारक, पुरुष, शब्दस्थान,

स्वतंत्र शब्द, ध्वनि परिवर्तन, सम्बन्ध तत्त्वदर्शी ध्वनियों का अर्थ तत्त्वदर्शी ध्वनियों से संयोग, ध्वनिगुण, रूप परिवर्तन, रूप परिवर्त०न के कारण, सादृश्य, नये रूपों की सृष्टि।

अध्याय आठ : वाक्य 161

वाक्य का स्वरूप, परिवर्तन की स्थितियाँ, वाक्य प्रकार, अयोगात्मक, अश्लिष्ट योगात्मक, श्लिष्ट योगात्मक, प्रश्लिष्ट योगात्मक, अन्य भाषाओं का प्रभाव, परिवेश परिवर्तन, अभिव्यक्ति की स्पष्टता का आग्रह।

अध्याय नौ : अर्थ 171

अर्थ दो टूक (Fixed point) नहीं, प्रयोक्ताओं की भूमिका, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, विस्तार, संकोच, अर्थादेश, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष, अर्थ परिवर्तन के कारण, भाव साहचर्य, सादृश्य, परिवेश परिवर्तन, विनम्रता प्रदर्शन, शोभन शब्द, व्यंग्य, भावात्मक बल, अज्ञान/भ्रान्ति, अधिक शब्दों के स्थान पर एक शब्द, किसी जाति या राष्ट्र के प्रति मनोभाव, वर्ग के एक शब्द में परिवर्तन, शब्द के दो रूपों का प्रचलन।

अध्याय दस : भाषा परिवार 223

प्रमुख भाषा परिवार, भाषा परिवार का आधार, मौलिक शब्द समूह की समानता, रूपात्मक समानताएँ, ध्वनिग्रामीय अर्थात् स्वनग्रामीय समानताएँ, संसार के विभिन्न भाषा परिवार, भारोपीय, सैमिटिक, हैमिटिक, यूरालअल्टाइक, चीनी-तिब्बती, द्राविड़, मलयपॉलीनेशियन, बंटू, बुशमैन, सूडानी, रेड इण्डियन, काकेशी, जापानी-कोरियायी, विभिन्न भाषा परिवारों की प्रमुख विशेषताएँ।

अध्याय ग्यारह : भारोपीय परिवार 250

नामकरण का विवाद, केंतुम् वर्ग, सतम् वर्ग। इन वर्गों की भाषाएँ और उनकी प्रमुख विशेषताएँ।

अध्याय बारह : भारतीय आर्य भाषाएँ 270

प्राचीन, मध्य और आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल। प्रमुख भाषाएँ और उनकी विशेषताएँ।

परिशेष-1 : भारतीय आर्येतर भाषाएँ। 333

परिशेष-2 : भाषाविज्ञान के क्षेत्र में भारत का मौलिक प्रदेय। 339

परिशेष-3 : भाषाविज्ञान के आधुनिक युगीन भारतीय अध्येता। 350

परिशेष-4 : भाषाविज्ञान के आधुनिक युगीन विश्व अध्येता। 356

परिशेष-5 : अंग्रेज़ी के सामने हिन्दी : रावण रथी विरथ रघुवीरा 367

परिशेष-6 : भाषाविज्ञान : प्रमुख ग्रन्थों की अपूर्ण सूची। 377

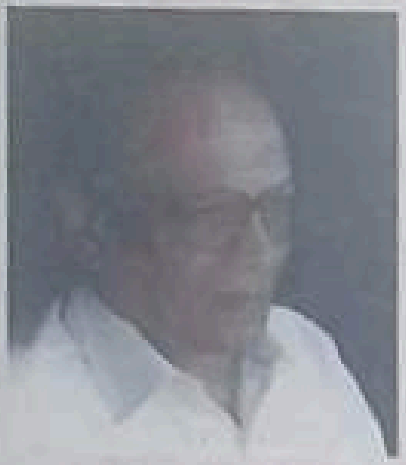

डॉ. जयकुमार जलज

डॉ. जयकुमार जलज : 2 अक्टूबर 1934 को ललितपुर (उ. प्र.) में जन्म। एम.ए. (हिन्दी साहित्य) 1957 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। पी-एच.डी. विक्रम विश्वविद्यालय से 1977 में। इलाहाबाद में पढ़ते वक्त डॉ. रामकुमार वर्मा के साथ 'बुन्देलभूमि' और डॉ. राजकुमार शर्मा के साथ 'त्रिवेणी' साहित्य पत्रिका का सम्पादन।

सन् 1961-62 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक। मध्यप्रदेश शासन की स्थानान्तर वाली नौकरी में उच्च शिक्षा के तहत सतना, रीवा, बरेली, सीहोर में सहा. प्राध्यापक, रतलाम के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष और फिर उसी में 1983 से सन् 1994 में सेवानिवृत्ति तक प्राचार्य। अब स्वतंत्र लेखन। प्राचार्य रहते हुए भी डॉ. जलज ने न कभी कक्षा अध्यापन से विराम लिया न शोध निर्देशन से। उनके निर्देशन में 11 छात्रों ने पी-एच.डी. प्राप्त की।

कविता का पहला प्रकाशन 19 जून 1950, दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली। पहला काव्य प्रसारण 26 जनवरी 1951, आकाशवाणी लखनऊ, इलाहाबाद।

पहला कविता संकलन 'सूरज सी आस्था' 1958 में। कविताएँ, गीत, लघुकथाएँ, समसामयिक तथा अन्य विषयों पर अनेक लेख, टिप्पणियाँ, विचार-पत्र।

भाषाशास्त्र पर पहली पुस्तक 'ध्वनि और ध्वनिग्रामशास्त्र' 1962 में। शोध और समीक्षा की पहली पुस्तक 'संस्कृत नाट्यशास्त्र : एक पुनर्विचार' 1962 में। डॉ. सुरेन्द्रनाथ गुप्ता के साथ 'तुम कहाँ से आए' पुस्तक बाल विज्ञान पर 1964 में। 'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान' पुस्तक 1972, 2001 और अब 'भाषाविज्ञान' पुस्तक 2018 में। 'संस्कृत और हिन्दी नाटक : रचना एवं रंगकर्म' 1985, 2000 और अब 2018 में। 'भगवान महावीर का बुनियादी चिन्तन' पुस्तक 2002 में, अब तक 52 संस्करण। कविता संचयन 'किनारे से धार तक' 2013, 2016 में।

प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश के कुन्दकुन्द, पूज्यपाद, जोइन्दु जैसे अनेक रचनाकारों को जिनके तार सीधे कबीर तक आते हैं हिन्दी में अनूदित किया।

ध्वनि और ध्वनिग्राम शास्त्र, तुम कहाँ से आए, संस्कृत और हिन्दी नाटक : रचना एवं रंगकर्म पर मध्यप्रदेश शासन का क्रमशः कामताप्रसाद गुरु पुरस्कार 1967, अखिल भारतीय विश्वनाथ पुरस्कार 1967, भोज पुरस्कार 1985। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का साहित्य सारस्वत सम्मान 1998। मध्य प्रदेश लेखक संघ का सर्वोच्च सम्मान अक्षर आदित्य 2006। अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान इलाहाबाद का राष्ट्रभाषा गौरव 2011। श्रुत सेवा निधिन्यास फीरोज़ाबाद का आचार्य महावीर कीर्ति अलंकरण 2012। अ.भा. बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्, भोपाल का राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार 2013। आचार्य हस्ती करुणा लेखक सम्मान चेन्नई 2014, श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का शताब्दी सम्मान 2017।

आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान
दिल्ली-110094 मो. : 09868584456

9 789380 943916